पाठ - 30

मुंशी प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय था। उनका जन्म सन् 1880 ई0 में वाराणसी जिले के लमही गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम अजायब राय और माता का नाम आनंदी देवी था। अजायब राय डाकखाने में क्लर्क थे और केवल 20 रु0 मासिक वेतन पाते थे। घर की आर्थिक स्थिति सामान्य थी। धनपत राय को पास के गाँव के एक मौलवी साहब के मदरसे में उर्दू-फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया। जब प्रेमचंद आठ वर्ष के थे तभी उनकी माता का देहान्त हो गया था। पिता ने दूसरा विवाह कर लिया।

प्रेमचंद का नाम हाई स्कूल मंे लिखाया गया। पिता का तबादला एक जगह से दूसरी जगह होता रहता था इससे प्रेमचंद को नयी-नयी जगहें तो देखने को मिलती थीं पर जमकर पढ़ाई-लिखाई के लिए समय नहीं मिल पाता था।

जब वह 13 वर्ष के थे तब उनके पिता का तबादला गोरखपुर हो गया। वहाँ उनका परिचय एक पुस्तक विक्रेता से हो गया। सम्पर्क बढ़ने से प्रेमचंद नियमित रूप से उसकी दुकान पर जाने लगे। दुकान से प्रेमचंद को पढ़ने के लिए किस्से कहानी की पुस्तकें मिल जाती थीं। वे पुस्तकें पढ़ने लगे इस प्रकार अध्ययन के प्रति उनकी रुचि बढ़ी और उन्होंने उर्दू के श्रेष्ठ उपन्यासकारों की लगभग वे सभी पुस्तकें पढ़ डालीं जो उस दुकान में उपलब्ध

थीं। इसी समय उन्होंने पुराणांे के उर्दू अनुवाद और ‘‘तिलिस्म होशरुबा’’ के भी कई भाग पढ़ डाले। उनका मन कथा-शिल्प में पूरी तरह डूब चुका था और इस प्रकार उनकी जिन्दगी का रास्ता भी बदल रहा था।

जब प्रेमचंद केवल पंद्रह वर्ष के थे और कक्षा 9 में पढ़ते थे तभी उनके पिता ने उनका विवाह कर दिया था। उनकी इच्छा थी कि वे एम0ए0 पास करके वकील बनें पर विवाह के एक वर्ष बाद ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया, फिर तो परिवार का पूरा भार प्रेमचंद के कंधों पर आ पड़ा। प्रेमचंद ने इस विषम परिस्थिति में भी हार नहीं मानी और अपनी पढ़ाई जारी रखी। वे अपने गाँव से 5 मील दूर वाराणसी के क्वींस कॉलेज मंे पढ़ने जाते थे। वहाँ से दो ट्यूशन पढ़ाकर वे लौटते थे। उन्हंे 5 रु0 मिलते थे। इसी से घर और पढ़ाई का खर्च चलता था। मैट्रिक परीक्षा मंे वे द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। अतः क्वींस कालेज मंे प्रवेश लेने का इरादा छोड़ दिया क्योंकि क्वींस कालेज में केवल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों की ही फीस माफ की जाती थी।

अर्थाभाव के कारण एक दिन प्रेमचंद अपनी गणित की पुस्तक बेचने एक दुकान पर गए। संयोग से वहीं एक छोटे से स्कूल के हेडमास्टर से उनकी भेंट हो गईं हेडमास्टर जी ने जब प्रेमचंद की यह दीन दशा देखी तो उन्हें उन पर बड़ी दया आयी और उन्होंने प्रेमचंद को 18 रु0 मासिक पर अपने स्कूल का अध्यापक बना दिया। नौकरी पाकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। वाराणसी से लगभग 60 किलोमीटर दूर चुनार जाकर उन्होंने अपना कार्यभार सँभाल लिया। प्रेमचंद अपना सारा समय अध्ययन में व्यतीत करते थे।

कुछ समय बाद क्वींस कालेज, वाराणसी के अंग्रेज प्रधानाचार्य बेकन साहब ने कृपा करके प्रेमचंद को सरकारी स्कूल का अध्यापक बना दिया। अनेक विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने के बाद वे सब डिप्टी इंस्पेक्टर आफ स्कूल्स हो गए। इस समय तक वे उर्दू में कहानियाँ लिखना आरंभ कर चुके थे और उनकी रचनाएँ ‘‘जमाना’’ पत्र में भी प्रकाशित होने लगी थीं। उन्होंने इन्टर और बी0ए0 की परीक्षाएँ भी पास कर ली थीं। सरकारी सेवा के नियमों का पालन प्रेमचंद बड़ी निष्ठा से करते थे। जब वे दौरे पर जाते तो भोजन आदि की व्यवस्था स्वयं करते थे और अध्यापकों की किसी प्रकार की सेवा स्वीकार नहीं करते थे। अपने क्षेत्र के अध्यापकों के बीच वे बहुत लोकप्रिय थे।

जब देश मंे आजादी की लड़ाई शुरू हुई तो हिंदी के कवियों और लेखकों पर भी स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रभाव पड़ा। उनकी रचनाओं में देशप्रेम की भावनाएँ व्यक्त होने लगीं। प्रेमचंद ने भी देशप्रेम की कहानियाँ लिखीं। ये अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीतियों के विरुद्ध भी लिखा करते थे। प्रेमचंद की इस प्रकार की कहानियों का संग्रह ‘‘सोजे वतन’’

सन् 1909 में प्रकाशित हुआ। उनकी ये रचनाएँ नवाबराय के नाम से छपती थीं। ‘‘सोजे वतन’’ ने सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। लेखक का पता लगाने में 6 महीने लग गए। अंत में हमीरपुर के जिला अधिकारी ने उन्हें अपने कार्यालय में बुलाया। जब प्रेमचंद जिला अधिकारी के सामने पहुँचे तो उन्होनंे देखा कि उनकी पुस्तक ‘‘सोजे वतन’’ जिला अधिकारी के सामने रखी हुई है। पूछने पर उन्होंने स्वीकार कर लिया कि पुस्तक उनकी ही लिखी हुई है। उन्हंे केवल चेतावनी देकर छोड़ दिया गया पर ‘‘सोजे वतन’’ की सभी प्रतियाँ जब्त कर ली गईं। इस समय तक प्रेमचंद उर्दू के सम्मानित लेखक बन चुके थे। इस घटना के बाद वे प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे।

प्रेमचंद सामाजिक कुरीतियों, अर्थहीन रूढ़ियों, परम्पराओं और अन्ध-विश्वासों का विरोध करते थे। इन्होंने बाल-विवाह के विरोध में और विधवा-विवाह के पक्ष में भी अपनी आवाज बुलन्द की। उर्दू के अपने एक उपन्यास में जो बाद में ‘‘प्रेमा’’ नाम से हिंदी में छपा था इन्होंने बाल विधवाओं के सूने, नीरस और दुःखद जीवन की समस्याओं को उठाया। इस उपन्यास में नायक एक विधवा से ही विवाह कर लेता है। बाद में प्रेमचंद ने ‘‘सेवा सदन’’ उपन्यास लिखा और दहेज की समस्या का विशद विवेचन किया। प्रेमचंद केवल उपदेश ही नहीं देते थे बल्कि जो कुछ वे कहते थे उसे स्वयं करके दिखा देते थे। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने स्वयं एक कुलीन परिवार की विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया। उनका यह वैवाहिक जीवन बहुत सुखमय रहा।

बंगाल विभाजन और उसके विरुद्ध चलाये गए आन्दोलन, गुप्त क्रान्तिकारी संगठनों, रूस की क्रान्ति, जलियाँवाला बाग की घटना और 1921 ई0 में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन का प्रेमचंद के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। पे्रमचन्द ने अन्याय का विरोध करने का निश्चय किया। उस समय वे गोरखपुर में विद्यालय निरीक्षक थे।

गांधी जी के आह्वान पर प्रेमचंद ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। वे कानपुर के मारवाड़ी विद्यालय में अध्यापक हो गए। आर्थिक संकट में तो वे जीवन भर रहे पर नौकरी छोड़ने के बाद उनकी कठिनाइयाँ और भी बढ़ गयी थीं। लखनऊ जाकर वे ‘‘मर्यादा’’ और ‘‘माधुरी’’ पत्रिकाओं का सम्पादन करने लगे। इस बीच इन्होनंे बहुत सी कहानियाँ और उपन्यास लिखे। कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में छपी थीं जिसके कई संग्रह भी प्रकाशित हुए किंतु लेखन कार्य से उन्हें इतना नहीं मिलता था कि उनकी गृहस्थी सुख से चल सके। उनकी रचनाएँ तो लोकप्रिय हुईं और खूब बिकी भी थीं पर सारा लाभ रचनाओं के प्रकाशक हड़प जाते थे।

प्रेमचंद पर गांधी जी की विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी के दृष्टिकोण का लौकिक पक्ष प्रेमचंद के उपन्यासांे में इस प्रकार उभर कर आया कि सामान्य जनता के लिए वह सहज ही ग्राह्य हो गया। अंग्रेजों की नीति के कारण उनके युग मंे वर्ग संघर्ष आरंभ हो गया। किसानों और जमींदारों के बीच संघर्ष हो रहा था। मजदूर मिल मालिकों से अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे थे। निर्धन श्रमिक पूँजीपतियों का विरोध कर रहे थे और हरिजन जातियाँ सवर्णों के अत्याचारों से त्रस्त थीं। इन संघर्षों के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गयी थीं। इनके समाधान के लिए समाज सुधार की आवश्यकता थी। ऐसे समय में प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के द्वारा समाज सुधार का कार्य आरंभ कर दिया।

प्रेमचंद मेहनत-मजदूरी करने वाले इस विशाल जन समुदाय के पक्षधर बने। उन्होंने अपनी रचनाओं मंे निर्धन की चीत्कार को मुखर बनाया, उनके जीवन के चरित्र अंकित किए, उनकी समस्याओं पर विचार किया और कठिनाइयों का हल सुझाया। उनकी रचनाओं से हमारे समाज सुधारक प्रेरणा प्राप्त करते रहे।

इनके द्वारा रचित उपन्यास में किसानों का अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार हो जाना राष्ट्रीय जागृति का सन्देश था। ‘‘रंगभूमि’’ में प्रेमचंद ने जीवन के सभी पक्षों का विशद विवेचन किया है। उसका सूरदास तो रंगभूमि का ऐसा खिलाड़ी है जिसने कभी हार नहीं मानी और जब हारा तो भी हँसता ही रहा। न्याय-प्रेम और सत्य-भक्ति के कारण उसकी हार भी जीत बन जाती है। इनके उपन्यास ‘‘कर्मभूमि’’ में दलित किसानों और मजदूरों की मूक वाणी का स्वर है। इसमें देश की जागृति और सजीवता के चित्र देखने को मिलते हैं। प्रेमचंद का अन्तिम उपन्यास ‘‘गोदान’’ तो देश की तत्कालीन परिस्थितियों का स्पष्ट दर्पण ही है। भारतीय नारी के आदर्शों का चित्रण कर प्रेमचंद ने इस उपन्यास में भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। उनके सेवा सदन, गबन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान जैसे उपन्यास एक के बाद एक प्रकाशित हुए। उन्होंने सैकड़ों कहानियाँ भी लिखीं जिनका संग्रह ‘‘मानसरोवर’’ नाम से आठ भागों मंे प्रकाशित हुआ। प्रगतिशील आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए उन्होंने ‘‘हंस’’ और ‘‘जागरण’’ पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। इन पत्रिकाओं मंे नये प्रगतिशील कवियों की रचनाएँ छाप कर प्रेमचंद उन्हें प्रोत्साहन देते रहे। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ये पत्रिकाएँ अधिक समय तक नहीं चल सकीं।

जीवन के अन्तिम दिनों में वे भाषा की समस्या को सुलझाने में लग गए। उनका कहना था, हिंदी और उर्दू को एक दूसरे से अलग करके दो कोठरियों मंे इस तरह नहीं बन्द किया जा सकता है कि उनका एक दूसरे से कोई सम्बन्ध ही न रहे। ऐसा करने से दोनों

भाषाओं का विकास रुक जाएगा। अपने इन विचारों को स्थापित करने के लिए प्रेमचंद ने बड़ी भाग-दौड़ की पर हिन्दुस्तानी भाषा का उनका स्वप्न साकार नहीं हो सका। उनका स्वास्थ्य पहले से ही खराब चल रहा था। पुनः इस भाग-दौड़ ने उनको थका डाला और वे बीमार पड़ गए। उनके पेट में जख्म हो गए थे जिसका बहुत इलाज किया गया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। 8 अक्टूबर 1936 ई0 को प्रातःकाल वे सदा के लिए सो गए।

अभ्यास

1. प्रेमचंद अपनी शिक्षा को क्रम से जारी क्यों नहीं रख सके ?

2. प्रारम्भिक जीवन में प्रेमचन्द ने आर्थिक कठिनाइयों का सामना किस प्रकार किया ?

3. पे्रेमचन्द ने किस उद्देश्य से अपने उपन्यासों और कहानियों की रचना की ?

4. ऐसी दो राजनीतिक घटनाओं को लिखिए जिनका उनके हृदय पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे अन्याय का विरोध करने के लिए तत्पर हो गए।

5. प्रेमचंद के रचनाओं के बारे में लिखिए।